18

तालाब बाँधता धरम सुभाव

रचनाकार का परिचय -

नाम - अनुपम मित्र, जन्म- 1948 ई० में वर्धा (महाराष्ट्र) में, मृत्यु - 19 दिसंबर, 2016, प्रमुख रचनाएँ- आज भी खरे हैं तालाब, राजस्थान की रजत बूंदें, गाँधी मार्ग आदि प्रमुख हैं।

अधिगम प्रतिफल-

- अपने परिवेश में मौज़ूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते / सुनाते हैं।
- विविध कलाओं जैसे - वास्तुकला, खेती-बारी और इनमें प्रयोग की जानेवाली भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उनपर अपने मन बननेवाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित/ ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

पाठ का परिचय – प्रस्तुत निबंध 'आज भी खरे हैं तालाब' पुस्तक के एक अध्याय का अंश है। इसमें जल की आवश्यकता, उपयोगिता एवं संरक्षण पर प्रकाश डाला गया है। जल ही जीवन है। अत: तालाब की उपयोगिता एवं इससे जुड़ी रोचक परंपराओं तथा उसके इतिहास पर प्रकाश डाला है। जल का भंडारण और धरती के नीचे के जल स्तर को ऊँचा बनाए रखने में उपयोगी तालाब हमारी संस्कृति का ही एक हिस्सा है। हमारे पुरखों ने धर्म को लोक कल्याण से जोड़ा ताकि उसकी उपलब्धता बनी रहे। वर्तमान समय में जल संकट को अपनी इस पुरानी परंपरा के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।

सार–संक्षेप

तालाब एक जल स्रोत ही नहीं बल्कि जीवन का आधार है। यह हमारे जीवन और संस्कृतियों से इस प्रकार जुड़ चुका है कि सुख से लेकर दुःख सबमें यह शामिल है 1 स्नेह के कारण इसके अनेक नाम रखे गए हैं जिनमें एक 'धरम सुभाव' भी है। बिहार में छठवीं सदी में आए भयंकर अकाल के समय मधुबनी क्षेत्र के लोगों ने मिलकर कुल 63 तालाब बनाए थे। इसी तरह बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल के बेटे ने जो खजाना पाया उससे चंदेलों के बने

© JCERT not to be republished

तालाबों की मरम्मत करवाई और नए तालाब बनवाए। अमावास और पूनो इन दो दिनों को किसान तालाबों की देख रेख और मरम्मत के लिए श्रमदान करते थे। पूस माह की पूनो को तालाब के लिए पैसे एकत्रित करने की परंपरा रहती है। छतीसगढ़ में इस दिन छेर छेरा त्यौहार मनाया जाता है। इसमें लोग दल में जाकर घर-घर से धान एकत्रित करते थे और वर्ष भर इसी कोष से तालाबों की मरम्मत का काम किया जाता। पहले विद्या केन्दों से दीक्षित होकर निकलने के बाद तालाब बनवाया जाता था। मधुबनी दरभंगा क्षेत्र में यह परंपरा काफी दिनों तक चली। आज शहरों को आबादी से आँका जाता है पहले गाँवों को तालाबों से आँका जाता था। छतीसगढ़ में कहावत है- "छै आगर, छै कोरी' यानि एक गाँव में 126 तालाब होने चाहिए। तालाब लोगों की संवेदनाओं से जुड़ा था और तमिलनाडू के दक्षिण आरकाट जिले के कुंराऊ समाज में लोग गोदने में भी इसे गोदवाते हैं। तालाब को भरने के लिए इंद्रदेवता को सीधे आग्रह न कर उनकी बेटी काजल माता की पूजा की जाती है। दक्षिण मुँह करके पूजा की जाती है राजा प्रजा सभी घाट तक आकर आशीर्वाद लेते हैं। तालाब का भर जाना एक मंगल उत्सव होता है। कोई भी तालाब अकेला नहीं होता। उड़ीसा के जन्नाथपुरी भुबनेश्वर) का बिन्दुसागर तालाब ऐसे ही बना है। जो भी दर्शन करने आता अपने प्रान्त से जल लाता और इस तालाब में डालता था। यह तालाब पूरे भारत का प्रतीक है। पहले तालाब को देखकर आने वाले साल की भविष्यवाणी की जाती थी अब परिस्थिति देखकर की जाती है लेकिन यदि आने वाले समय की भविष्यवाणी करनी हो तो जलस्तर के आधार पर यही कहा जाएगा कि बुरा समय आने वाला है। इस तरह लेखक ने जल संरक्षण के प्रति सचेत होने की चेतावनी दी है।

गद्यांश की व्याख्या –

जो समाज को जीवन दे .... बुंदेलखंड में ये तालाब आज भी हैं। (पृष्ठ संख्या 134-135)

शब्दार्थ –

शब्द	अर्थ
निर्जीव	जिसमें जीवन न हो
कृतज्ञता	एहसानमंद
कोष	ख़जाना, संचित धन

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

लेखक तालाब के बारे में कहते हैं कि जो समाज को जीवन दे उसे निर्जीव कैसे कहा जा सकता है 1 समाज का जीवन उसके इर्द-गिर्द ही होता है 1 पुराने समय को याद करें तो सुबह उठते है मुँह धोने से लेकर खाना पकाना, पीने के लिए जल, पूजा - संस्कार, माल मवेशी, खेती बाड़ी, कपड़े धोना जैसे सभी काम के लिए तालाब या जल स्रोत की आवश्यकता होती थी। इसलिए इसके प्रति सबका स्नेह होता है। जिससे स्नेह होता है उसके लोग कई नाम रखते हैं। आपने देखा होगा छोटे बच्चों के कई नाम होते हैं। इसी तरह तालाब को भी अनेक नामों से पुकारा जाता है। तालाब को उसके स्वभाव के कारण 'धरम सुभाव' भी कहा जाता है। सुख हो तो तालाब दुःख हो तो तालाब। जब संकट आता तो तालाब बनाए जाते ताकि तात्कालिक राहत मिल जाए कोई सुखद प्रसंग होता तो तालाब बनाए जाते ताकि एक स्मृति रह सके। बिहार में छठवीं सदी में आए भयंकर अकाल के समय मधुबनी क्षेत्र के लोगों ने मिलकर कुल 63 तालाब बनाए थे। आप सोच सकते हैं कि कैसे लोग संगठित हुए होंगे और यह महान काम किया होगा 1 सहयोग, नेतृत्व और बुद्धि कौशल से इस कार्य को किया गया होगा

पुराने समय से यह परंपरा रही है कि कोई पुराना खज़ाना यदि किसी को मिल जाता था तो वह उससे कोई सामाजिक कार्य करता था। इसमें तालाब बनाना, उसकी मरम्मत करना, सफाई करना आदि इसी तरह बुंदेलखंड के राजा छत्रसाल के बेटे ने जो खजाना पाया उससे चंदेलों के बने तालाबों की मरम्मत करवाई और नए तालाब बनवाए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. प्रस्तुत पाठ के अनुसार तालाब का पर्यायवाची शब्द क्या है?
2. दुख में राहत देने के लिए तालाब बनाए जाते थे। प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर इसका एक उदाहरण दीजिए।
3. प्राचीन काल में गड़ा हुआ खजाना मिलने पर कैसी परंपरा थी ?
4. चंदेलों द्वारा बनाए गए तालाबों की मरम्मत कैसे हुई ?

गद्यांश की व्याख्या –

"पुराने समाज की मान्यताओं के अनुसार अमावास और पूनो, इन दो दिनों को कारज यानी अच्छे और वह भी सार्वजनिक कामों का दिन माना गया।..........छत्तीसगढ़ी में बड़े गाँव के लिए कहावत है कि वहाँ " — "छै आगर, छै कोरी' यानी 6 बीसी और 6 अधिक, 120 और 6 या 126 तालाब होने चाहिए। (पृष्ठ संख्या 135-136)

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

शब्द	अर्थ
निर्जीव	जिसमें जीवन न हो
कृतज्ञता	एहसानमंद
कोष	ख़जाना, संचित धन

व्याख्या –

अमावस्या और पूर्णिमा ये दो दिन ऐसे होते थे जिनमें सार्वजनिक काम किए जाते थे जैसे - तालाब इत्यादि की देखभाल एवं मरम्मत करना। ऐसा नियम था कि इन दो दिनों में व्यक्तिगत काम नहीं किए जाते थे बल्कि सार्वजनिक काम किए जाते थे। इस तरह पंद्रह दिनों में एक बार यह अवसर आता था जब लोग अपने श्रम का दान किया करते थे यानी बिना कोई मेहनताना लिए जनहित में काम करते थे। इस तरह साल के ग्यारह पूर्णिमा में श्रमदान करते और पूस माह की पूर्णिमा को तालाब के लिए धान या पैसे इकट्ठे करते थे। छतीसगढ़ में इस दिन एक विशेष त्यौहार छेरा - छेरी मनाया जाता है। इसमें लोग दल में निकलते हैं, घर-घर जाकर गीत गाते हैं और गृहस्थ से धान इकट्ठा करते हैं। पूस के महीने में धान कट कर आ चुकी होती है। हरेक घर अपनी इच्छानुसार धान दान करता है। इस तरह जमा किया गया धान ग्राम कोष में रखा जाता है। इसी एकत्रित धन से पूरे साल तालाबों की मरम्मत वगैरह होती है। जो सामाजिक मेलजोल उस समय दिखता था वो अब नहीं दिखता। लेखक को लगता है जैसे अब अधिक पढ़ लिख लेने वाले लोग समाज से कट जाते हैं। लेकिन पहले ऐसा नहीं था। पहले बड़े विद्याकेंद्रों से पढ़ कर निकलने के अवसर पर लोग तालाब बनवाया करते थे। बिहार के मधुबनी दरभंगा क्षेत्र में यह परंपरा काफी बाद तक चलती रही। तालाबों की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, कहीं कहीं उनका विवाह भी कराया जाता है। आज शहरों को उनकी आबादी से जाना जाता है। पहले गाँवों की माप तालाबो से होती है। छत्तीसगढ़ में बड़े गाँव के लिए कहावत है कि 'छै आगर, छै कोरी' यानी 126 तालाब होने चाहिए।

गद्यांश के प्रश्न

5. 'सार्वजनिक कामों के लिए कौन-सी तिथियाँ निर्धारित की गई हैं?
6. छेर छेरा त्यौहार कैसे मनाया जाता है ?
7. 'तालाबों में प्राण है।' इसे ग्रामवासी कैसे प्रमाणित करते थे ?
8. पुराने समय में गाँवों की विशालता का अंदाज़ा कैसे लगाया जाता था?

© JCERT not to be republished

गद्यांश की व्याख्या –

" इन तालाबों के दीर्घ जीवन का एक ही रहस्य था - ममत्व।.................. तो यही कहा जा सकता है कि बुरा समय आनेवाला है ।" (पृष्ठ संख्या 136 - 138)

शब्दार्थ –

शब्द	अर्थ
ममत्त्व	अपना होने का भाव
मान्यता	मानने का भाव
रख-रखाव	देखभाल
याचना	नम्रतापूर्वक माँगना
महोत्सव	बड़ा उत्सव
तीर्थ	धार्मिक महत्व वाले स्थान
पुण्यात्मा	धर्मात्मा, अच्छे विचार वाली आत्मा

व्याख्या –

लेखक बताते हैं कि पहले तालाब स्वच्छ रहते थे, लम्बे समय तक जीवित रहते थे इसका कारण था लोगों में इसके प्रति अपनेपन का भाव। स्त्रियाँ यह मनाती थी कि तालाब में इतना पानी रहे कि भुजलियाँ के आधे अंग पानी में डूब सकें। लोग इसी तरह का वातावरण रखते थे कि तालाब बना रहे। तालाब बनाने को तीर्थाटन जैसा महत्व दिया गया है। तालाब से इतना मोह रहता था कि स्त्रियाँ अपने शरीर पर गोदने में भी तालाब या बावड़ी गोदवाती थीं। आठ-दस रेखाओं और कुछ बिंदियों से पूरे तालाब का दृश्य बन जाता था। तमिलनाडु के दक्षिण आरकाट जिले के कुंराऊ समाज में भी यह प्रथा है। तालाब लोगों के मन में रहता था उसने परिवार के सदस्य या सगे-संबंधी की तरह। यदि समय पर पानी न बरसे तो वर्षा के देवता इंद्र तक खबर भेजवाने के लिए काजल माता की शरण गहि जाती उनकी पूजा होती। गाँव की सीमा को कांकड़ बनी कहते हैं उसके वन में बने तालाब तक पूजा-गीत गाते हुए लोग एकत्र होते हैं और फिर दक्षिण की ओर मुँह कर सारा गाँव काजल माता से पानी की याचना करता है। मान्यता है कि पानी दक्षिण से ही आटा है। तालाब पानी से लबालब भर जाता था फिर घाट पर राजा और प्रजा एकत्रित होकर पूजा-अर्चना करते और लबालब भरे तालाब का आशीर्वाद लेकर लौटते थे। तालाब का भर जाना मंगल का सूचक होता था। तालाब से ग्रामीणों का दैनिक जीवन जुड़ा होता था। खेती-बाड़ी,

© JCERT not to be republished

घर के कामकाज सब तालाब पर निर्भर होते थे इसलिए इसके भर जाने पर उत्सव का माहौल होता था। कोई भी तालाब अकेला नहीं होता वह जल परिवार का एक सदस्य होता है यानी जल स्रोत एक दूसरे से संबंधित होते हैं। जब जल स्तर नीचे होता है तो सभी जल स्रोतों जैसे-नदी, तालाब, कूआँ, हैंडपम्प सबका जल स्तर कम हो जाता है। लोगों की इस मान्यता ने एक अनोखा तालाब उड़ीसा के जगन्नाथपुरी जिसे अब भुवनेश्वर जिले के नाम से जाना जाता है वहाँ तैयार किया है। इस तालाब का नाम है बिन्दुसागर। इसमें पूरे देश के श्रद्धालुओं ने अपने क्षेत्र का जल समर्पित किया है। यह तालाब भारत की एकता का प्रतीक है।

तालाब का घटता जलस्तर चिंता का विषय है। पहले तालाब के जल के आधार पर भविष्यवाणी की जाती थी। आज यदि इस आधार पर भविष्यवाणी की जाय तो यही कहा जा सकता है कि बुरा समय आनेवाला है। अतः जल संरक्षण हमारा प्रमुख दायित्व है।

गद्यांश के प्रश्न

9. तालाबों के दीर्घ जीवन का क्या रहस्य था ?
10. 'काजल माता' की पूजा क्यों की जाती थी ?
11. तालाब का भरना किस बात का सूचक है?
12. तालाब को जल-परिवार का सदस्य क्यों कहा गया है?

बहुवैकल्पिक प्रश्न

13. 'तालाब बाँधता धरम सुभाव' के लेखक कौन हैं?

    क. अनुपम मिश्र

    ख. विश्वनाथ त्रिपाठी

    ग. कामता प्रसाद सिंह 'काम'

    घ. हरिशंकर परसाई

14. 'तालाब बाँधता धरम सुभाव' किस विधा में लिखा गया है ?

    क. कहानी

    ख. उपन्यास

    ग. निबंध

    घ. रिपोर्ट

15. 'धरम सुभाव' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

    क. गाँव वालों के लिए

    ख. महाराजा छत्रसाल के लिए

    ग. तालाब के लिए

© JCERT not to be republished

घ. छत्तीसगढ़ी के लिए

16. बिहार के मधुबनी इलाके में छठी सदी में आए अकाल के समय पूरे क्षेत्र के गाँव ने मिलकर कितने तालाब बनाए थे?

क. 63

ख. 64

ग. 65

घ. 66

17. खजाने के बारे में बीजक (संकेत सूत्र) किसे मिला था ?

क. महाराजा छत्रसाल को

ख. महाराजा छत्रसाल के बेटे को

ग. चंदेलों को

घ. बुंदेलखंड को

18. पूस माह की पूर्णिमा के दिन क्या किया जाता था ?

क. तालाब की सफाई की जाती थी

ख. छेर छेरा त्यौहार मनाया जाता था

ग. खेतों में काम किया जाता था

घ. व्यक्तिगत कार्य किया जाता था

19. "छै आगर, छै कोरी" कहाँ की कहावत है?

क. मधुबनी

ख. दरभंगा

ग. बुंदेलखंड

घ. छत्तीसगढ

20. यदि समय पर पानी न बरसता तो किसकी पूजा की जाती थी ?

क. इन्द्रदेव की

ख. लक्ष्मी माता की

ग. तालाब की

घ. काजल माता की

© JCERT not to be republished

21. 'बिन्दुसागर' नाम का तालाब कहाँ स्थित है?

क. बिहार

ख. झारखंड

ग. उड़ीसा

घ. बंगाल

22. 'तालाब बाँधता धरम सुभाव' यह पाठ क्या सन्देश देता है ?

क. मृदा संरक्षण

ख. जल संरक्षण

ग. वन संरक्षण

घ. वन्यजीव संरक्षण

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. तालाबों को 'धरम सुभाव' क्यों कहा गया है ?

उत्तर : व्याकरण के एक प्राचीन ग्रंथ में तालाबों को उनके स्वभाव के कारण 'धरम सुभाव' कहा गया है। अर्थात् तालाब के चारों ओर संस्कृतियों का विकास एवं वर्द्धन होता है।

2. छत्रसाल अपने बेटे जगतराज से क्यों नाराज हुए ?

उत्तर : जगतराज ने बीजक की सूचना के अनुसार खजाना को खोद निकाला था। जब छत्रसाल को पता चला तो वे बहुत नाराज हुए। उन्होंने आज्ञा दी कि चंदलों के सभी तालाबों को उस खजाने से मरम्मत की जाए और नए तालाब बनाए जाएँ।

3. छेर छेरा त्योहार क्या है? यह किस राज्य में मनाया जाता है ?

उत्तर : प्राचीन समाज में वर्ष की बारह पूर्णिमाओं में से ग्यारह को श्रमदान के लिए रखा जाता था। पर पूस माह की पूनों पर तालाब के लिए धान या पैसा एकत्र किया जाता था। छत्तीसगढ़ में इस दिन को छेर छेरा त्योहार मनाया जाता है। इसमें लोगों का दल गृहस्थ से धान एकत्र करता है।

4. जो समाज को जीवन दे................. इस वाक्य का क्या आशय है ?

उत्तर : जो समाज को जीवन दे अर्थात् जला जल ही जीवन है। इस जीवनरूपी जल का संग्रह हम तालाब में करते हैं। अर्थात् तालाब समाज की प्यास बुझा कर जीवन प्रदान करता है।

5. बिन्दुसार सागर कैसे बना? यह कहाँ पर स्थित है ?

उत्तर : बिन्दुसार सागर जगन्नाथ पूरी में है। यहाँ आने वाले भक्त अपने क्षेत्र से थोड़ा-थोड़ा जल साथ ले आकर इसमें अर्पित करते हैं। इससे यह एक आस्था का प्रतीक बन गया है।

© JCERT not to be republished

6. पाठ के आधार पर तालाब के लाभों का वर्णन करें।

उत्तर : तालाब के लाभ-

(i) हम प्यास बुझाते हैं।

(ii) पशु-पक्षी, पादप अपनी जलीय आवश्यकता पूर्ण करते हैं।

(iii) सिंचाई का कार्य सम्पादित किया जाता है।

(iv) मतस्य पालन संभव है।

7. अमावस और पूनो के दिन किस प्रकार के सार्वजनिक हित वाले कार्य किए जाते थे ?

उत्तर : पुराने समाज की मान्यता के अनुसार अमावस और पूनो इन दो दिनों को कारज यानी अच्छे एवं सार्वजनिक कामों का दिन माना गया है। इस दिन निजी और पूनो को अपने खेत में काम नहीं कर क्षेत्र के तालाब निर्माण एवं इसकी देख-रेख का कार्य किया करते थे।

भाषा—संदर्भ

प्रश्न 1. 'लोक धरम सुभाव से जुड़ जाता है।' इस वाक्य में 'लोक' शब्द का अर्थ है - संसार, जनता। 'लोक' शब्द में 'कथा' जोड़कर नए शब्द बनाए जा सकते हैं।

जैसे- लोक + कथा = लोककथा।

'लोक' शब्द में कुछ अन्य शब्द जोड़कर पाँच नए शब्द बनाइए एवं इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

1. लोक+संगीत- लोकसंगीत - नागपुरी लोकसंगीत से पूरा माहौल झूम उठा।
2. लोक + नृत्य - लोकनृत्य - टेसू पर्व में अनायास ही लोकनृत्य के लिए पैर थिरकने लगते हैं।
3. स्वर्ग + लोक- स्वर्गलोक - स्वर्गलोक में अप्सराएँ होती हैं।
4. पाताल+ लोक- पाताललोक- पाताललोक में शेष नाग का निवास होता है।
5. इंद्र + लोक- इंद्रलोक - इन्द्रलोक में आमोद-प्रमोद की सभी व्यवस्थाएँ थीं।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए:

तालाब, प्राचीन, किसान, जल, इंद्र

उत्तर-

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
तालाब	सरोवर
प्राचीन	पुराना
किसान	कृषक
जल	पानी
इंद्र	देवराज

प्रश्न 3. 'परोपकार' शब्द, 'पर' और 'उपकार' के योग से बना है (पर + उपकार = परोपकार) । यहाँ 'पर' के अंत में आया स्वर 'अ' तथा 'उपकार' के आरंभ में आया स्वर 'उ' के मिलने से जो परिवर्तन हुआ है, उसे संधि कहते हैं। बताइए, नीचे लिखे शब्दों में किन-किन शब्दों की संधि हुई है ?

महोत्सव, जगन्नाथ, पुण्यात्मा, महात्मा

उत्तर-

महोत्सव - महा + उत्सव

जगन्नाथ- जगत् + नाथ

पुण्यात्मा- पुण्य + आत्मा

महात्मा - महान + आत्मा

गद्यांश से सम्बंधित के प्रश्नोत्तर

1. प्रस्तुत पाठ के अनुसार तालाब का पर्यायवाची शब्द 'धरम सुभाव' है।

2. दुख में राहत देने के लिए तालाब बनाए जाते थे। प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर इसका एक उदाहरण बिहार के मधुबनी जिले का है जिसमें छठवीं सदी में आए भयंकर अकाल के समय इस क्षेत्र के लोगों ने मिलकर कुल 63 तालाब बनाए थे।

3. प्राचीन काल में गड़ा हुआ खजाना मिलने पर उसे परोपकार में लगाने की परंपरा थी और परोपकार का अर्थ प्रायः तालाब बनाना था उनकी मरम्मत करना माना जाता था।

© JCERT not to be republished

4. बुंदेलखंड के महाराज छत्रसाल के पुत्र को गड़े हुए खजाने के बारे में एक बीजक मिला था। बीजक की सूचना के अनुसार जगतराज ने खजाना खोद निकाला। छत्रसाल को पता चला तो वे बहुत नारा हुए। पिता ने बेटे को आज्ञा दी कि उस खजाने से चंदेलों के बने सभी तालाबों की मरम्मत की जाए। खजाना बहुत बड़ा था। सभी तालाबों की मरम्मत हो गई फिर भी ख़त्म नहीं हुआ तब नए तालाब भी बनने शुरू हो गए। ये तालाब बुंदेलखंड में आज भी हैं।

5. प्रत्येक महीने की अमावस्या और पूर्णिमा को सार्वजनिक कार्यों के लिए निर्धारित किया गया है।

6. छेर छेरा त्यौहार में लोगों के दल निकलते हैं, घर-घर जाकर गीत गेट हैं और गृहस्थ से धन एकत्रित करते हैं। इस समय तक धन की फसल कट कर आ चुकी होती है। हार घर के लोग अपने सामर्थ्य से धन का दान करते हैं। इस तरह जमा किये गए धान को ग्रामकोश में जमा किया जाता है और आने वाले दिनों मनें इसी से तालाब की मरम्मत का काम किया जाता है।

7. तालाबों में प्राण है इसे प्रमाणित करने के लिए ग्रामवासी निम्नलिखित कार्य करते थे:-

   i. तालाबों की प्राण-प्रतिष्ठा करते थे।

   ii. तालाबों का नाम रखते थे।

   iii. कहीं-कहीं तालाबों का पूरी विधि के साथ विवाह करते थे।

   iv. ताम्रपत्र या शिलालेख पर तालाब का पूरा विवरण उकेरते थे।

8. पुराने समय में गाँवों की विशालता का अंदाज़ा तालाबों की संख्या से लगाया जाता था।

9. तालाबों के दीर्घ जीवन का रहस्य 'ममत्व' है।

10. 'काजल माता' की पूजा पानी बरसा कर तालाब भरने के लिए की जाती थी। जल के देवता इंद्र हैं, लेकिन उनसे सीधे-सीधे कैसे कहा जाए, इसलिए उनकी बेटी काजल की आराधना की जाती थी कि वो यह प्रार्थना इंद्र देव तक पहुँचाकर उनका ध्यान इस तरफ खींचे।

11. तालाब का भरना आनंद एवं मंगल का सूचक है।

12. तालाब को जल परिवार का सदस्य इसलिए कहा गया है कि 'तालाब' में भी नदियों एवं अन्य स्रोतों का जल समाहित होता है। उदाहरण के लिए जगन्नाथपुरी का 'बिन्दुसागर' देश भर के श्रद्धालुओं द्वारा लाए गए जल से निर्मित है।

© JCERT not to be republished

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर

13. क. अनुपम मिश्र

14. ग. निबंध

15. ग. तालाब के लिए

16. क. 63

17. ख. महाराजा छत्रसाल के बेटे को

18. ख. छेर छेरा त्यौहार मनाया जाता है

19. घ. छत्तीसगढ़

20. घ. काजल माता की

21. ग. उड़ीसा

22. ख. जल संरक्षण

© JCERT not to be republished